डॉ. शशि किरण

मानवशास्त्र विभाग,

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्दालय,रॉची

सेमेस्टर :एम.ए. चतुर्थ, पेपर: CC:10,युनिट:4

आर .के. मर्टन

आर. के. मर्टन मुख्यतः एक ब्रिटिश समाजशास्त्री थे.वह जटिल समाजों से जुड़े हुए थे. अपनी पुस्तक सोशल थ्योरी एंड सोशल कल्चर में इन्होंने प्रकार्यवाद को परिभाषित करते हुए कहा कि प्रकार्य परिणाम है, जो एक निश्चित व्यवस्था के समायोजन या अनुकूलन के लिए बनाए जाते हैं.

प्रकार्य को प्रकट करने के लिए कई अन्य शब्द जैसे उपयोगिता उद्देश्य इत्यादि का प्रयोग होता है. उनके अनुसार एक सांस्कृतिक प्रणाली पर प्रकार्य का धनात्मक प्रभाव भी हो सकता है साथ ही ऋणात्मक प्रभाव भी संभव है. इसी आधार पर उन्होंने प्रकार्य एवं अप्रकार्य तथा प्रकट एवं अप्रकट की अवधारणा प्रस्तुत की थी .

मर्टन के अनुसार प्रकार्य वे परिणाम है, जो सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन या समायोजन का काम करते हैं. अगर सामाजिक संरचना की कोई इकाई उस संरचना के अनुकूलन में सहयोग देती है तब उसे प्रकार्य कहते हैं. लेकिन अगर वह इकाई सामाजिक संरचना के अनुकूलन में सहयोग नहीं करती है, उसे अप्रकार कहेंगे. उसी प्रकट एवं अप्रकट की व्याख्या करते हुए मर्टन ने कहा की प्रकट प्रकार्य सामाजिक व्यवस्था में अनुकूलन लाने में सहयोगी होती है एवं मान्यता प्राप्त होती है दूसरी ओर अप्रकट प्रकार्य़ सामाजिकव्यवस्था में अनुकूलन तो लाते हैं किंतु इन्हें सदस्यों की मान्यता नहीं मिलती है.

इस प्रकार हम पाते हैं कि मर्टन ने सामाजिक संरचना को प्रकार्य एवं अप्रकार्य के संदर्भ में समझाने का प्रयास किया है.